शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में कृषकों का आर्थिक जीवन

डॉ.ममता गोखे
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
आयपीएस एकेडेमी
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत गावों का देश है। सन 2011 की जनगणना के अनुसार आज भी 70 प्रतिशत जनसंख्या गावों में निवास करती है। ग्रामीणों की आय का मुख्य स्रोत कृषि है। जब मुंशी प्रेमचन्द ने अपना लेखन कर्म शुरू किया थ, तब भारत में अंग्रेजों का शासन था। उनके अत्याचारों से ग्रामीण जनता त्रस्त थी। देशी जमींदारों ने लोगों को अपना गुलाम बना रखा था। अनेक प्रकार की जातियों और वर्गों में बंटे गावों में किसानों की दशा अत्यंत दयनीय थी। उनकी आर्थिक स्थिति उन्हें सिर उठाने का मौक़ा नहीं देती थी। मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति के दुःख-दर्द का यथार्थ चित्रण किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

हमारे लिये ग्रामीण समाज का अध्ययन करना बहुत आवश्यक है। सत्य तो यह है कि वास्तविक भारत यही है। ग्रामीण से अभिप्राय है ग्राम से संबंधित। ग्रामीण पर्यावरण, ग्रामीण जन-जीवन, ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था, ग्रामीण व्यवस्था तथा ग्रामीण समस्याएँ। ग्रामीण जनजीवन आज भी प्रकृति से जुडा हुआ और उस पर अवलम्बित है।

टी.एल.स्मिथ का कथन है कि ग्रामीण समाज यदि ठीक से कहें तो ग्रामीण जीवन का समाज। यह ज्ञान की वह व्यवस्थित शाखा है जो ग्रामीण समाज, उसके संगठन और संरचना व उसकी प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करने के फलस्वरूप अस्तित्व में आई है। ए.आर. देसाई का कहना है, "स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् ग्रामीण सामाजिक संगठन, संरचना, प्रकार्य तथा उद्विकास का प्रमुख उद्देश्य जरूरी ही नहीं अत्यन्त जरूरी हो गया है।"

युग-विशेष का सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन परस्पर घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध होता है। समाज के इन विभिन्न घटकों को अभिव्यक्ति प्रदान करके ही कोई साहित्यकार अपने युग का यर्थाथ चित्र प्रस्तुत करने में समर्थ होता है। प्रेमचन्द साहित्य में युगीन समाज का विशद और यर्थाथ चित्र देखा जा सकता है। प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में अपने युग के न केवल पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान की वरन् आर्थिक जीवन और उससे सम्बद्ध समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार स्तम्भ है। अंग्रेजों की स्वार्थपूर्ण आर्थिक नीति के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का सन्तुलन नष्ट हो गया था। कृषि पर निरन्तर बोझ बढ़ता गया। परिणामस्वरूप भारतीय कृषक की दशा अत्यन्त दयनीय हो गई। कृषक आर्थिक अभावों के मध्य जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य था।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

औपनिवेशिक व्यवस्था में शोषण चरम पर था। इरफान हबीब सहित अनेक इतिहासकार इस बात का प्रमाण उपलब्ध कराते हैं कि मध्य युग में भी कृषि वस्तुएँ यथेष्ट परिमाण में बाजार में आती थीं और यह मुगल काल के अन्तिम दिनों में और भी ज्यादा बढ़ रहा था। क्योंकि राजस्व फसल के बदले मुद्रा में और उन उत्पादों की तुलना में बढ़े हुए अनुपात में वसूल किया जा रहा था।

ग्रामीण जीवन से प्रेमचंद का घनिष्ठ एवं निकट का सम्बन्ध था। प्रेमचंद के हृदय में भारत के दीन-हीन कृषकों के प्रति सच्ची सहानुभूति थी। भारतीय कृषक के कष्टों, उनकी विवशता एवं आर्थिक दुर्दशा से वे परिचित थे। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में नागरिक जीवन की समस्याओं के साथ-साथ ग्रामीण जीवन की समस्याओं को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। ग्रामीण जीवन की समस्याओं को दृष्टि में रखकर प्रेमचंद ने अनेक कहानियों की भी रचना की।

कृषकों की आर्थिक समस्याएं

किसानों की अनेक समस्याएँ उसकी आर्थिक दुर्दशा के कारण हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। प्रेमचंद ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया था। गहन चिन्तन और मनन के बाद वे इस निष्कर्ष पर पंहुचे थे कि किसान की आर्थिक दशा में सुधार किये बिना उनकी कोई भी समस्या नहीं सुलझ सकती। इसलिए उन्होंने अपने उपन्यास और कहानियों में भारतीय कृषक की आर्थिक दशा का विशद चित्र अंकित करते हुए कारणों पर भी प्रकाश डाला है।

प्रेमचंद की 'पूस की रात' कहानी कृषक की आर्थिक दशा का सजीव चित्र प्रस्तुत करती है। इस कहानी का हल्कू मर-मरकर खेतों में काम करता है लेकिन वह अपनी आय से पूरा लगान भी नहीं चुका पाता। पेट भरने के लिए तीन रुपये जमा करता है। ये तीन रुपये भी उसे बाकी चुकाने के लिए जमींदार के कारिंदे को देना पड़ते हैं। पूस की अंधेरी रात में शीत उसे इतना निस्पन्द बना देती है कि खेत के चरे जाने की आहट पाकर भी वह निश्चेष्ट बैठा रहता है। खेती के नष्ट हो जाने पर उसे यह सोचकर प्रसन्नता होती है कि रात की ठंडक में उसे खेत में नहीं सोना पड़ेगा। आर्थिक मन्दी के बाद कृषि कितनी लाभहीन हो गई है इसका परिचय इस कहानी से मिलता है। इस कहानी का हल्कू खेती से जो कुछ पैदा करता है वह सब लगान चुकाने में निकल जाता है और फिर भी बाकी बना रहता है। पेट भरने के लिए उसे मजदूरी करनी पड़ती है और कई बार मजदूरी का पैसा भी बाकी चुकाने में निकल जाता है।

दिसम्बर 1932 के 'जागरण' में कृषकों की दशा पर विचार करते हुए प्रेमचंद ने लिखा - "वास्तव में हालत तो यह है कि छोटे-छोटे किसानों की खेती पर जो खर्च पड़ रहा है वह भी वसूल नहीं होता, लगान तो दूर की बात है।" इसका स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि किसान महाजन से रुपया उधार लेकर लगान चुकाता है, लेकिन फिर भी कभी पूरा लगान नहीं अदा कर पाता।

किसानों की दुर्दशा का कारण पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष भी है। भूमि पर बोझ बढ़ता जा रहा है, चाहने पर भी किसान को भूमि नहीं मिलती। जमींदार ने भी लगान बढ़ा दिया है। इसलिए किसान अपने ही साथी की विपत्ति का लाभ उठाने को तैयार हो जाता है । किसानों के पारस्परिक ईष्या-द्वेष के कुपरिणाम प्रेमचन्द्र की 'मुक्ति-मार्ग' कहानी में देखा जा सकता है । इस

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कहानी में झींगुर और बुद्धू का पारस्परिक वैमनस्य पूरे गाँव को विपत्ति में डाल देता है। बुद्धू झींगुर के खेत में आग लगा देता है। झींगुर के साथ ही पूरे गाँव की ऊख जलकर भस्म हो जाती है। प्रेमचन्द इस तथ्य से पूर्णतया परिचित है कि "केले को काटना भी इतना आसान नहीं, जितना किसान से बदला लेना। उसकी सारी कमाई खेतों में रहती है या खलिहानों में।"

कृषकों की सरलता एवं निरीहता भी उनकी दुर्दशा का एक कारण है। किसान ही नहीं गाँव का प्रत्येक प्राणी जमींदार और उसके कारिन्दों के अत्याचार से पीड़ित है। लोकमत का सम्मान कहानी का बेचू धोबी जमींदार के कारिन्दों और चपरासियों के अत्याचार से पीड़ित होकर गाँव छोडने को विवश हो जाता है। 'विध्वंस' कहानी की विधवा भुनगी को जमींदार उदयभानु के दाने बेगार में भूनने पड़ते हैं और उसके घर का पानी भी भरना पड़ता है। संक्रान्ति के पर्व पर भुनगी समय पर जमींदार के दाने नही भून पाती। फलतः जमींदार उसका भाड़ खुदवा डालता है। स्पष्ट है कि जमींदार अपने गाँव में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपना बिना पैसों का गुलाम समझता है।

जमींदार के हाथ में असीम शक्ति है वह जब चाहे तब लगान में वृद्धि कर सकता है, अपने असामियों को बेदखल कर सकता है। 'बलिदान' कहानी का जमींदार ओंकारनाथ हरखू की मृत्यु के बाद उसके खेत उसके पुत्र गिरधारी का नही जोतने देता क्योंकि दूसरा असामी आठ रुपये बीघे के स्थान पर दस रुपया बीघा लगान और एक सौ नजराने का अलग से देने को तैयार है।

जमींदार स्वयं तो प्रायः नगर में रहता है। गाँव में उसके कारिन्दे तथा चपरासी लगान वसूल करते हैं। प्रेमचन्द ने यह अनुभव कर लिया था कि किसानों की दुर्दशा का एक कारण यह भी है कि नगर में रहकर जमींदार किसानों की समस्याओं से परिचित नहीं हो पाता। गाँव में जमींदार के कर्मचारी स्वयं को जमींदार से कम नहीं समझते। 'उपदेश' कहानी में प्रेमचन्द ने इस ओर संकेत किया है कि किसानों की समस्याओं से परिचित होने के लिए और उन्हें अपने कर्मचारियों के अत्याचारों से बचाने के लिए जमींदार को गाँव में ही रहना होगा। इस कहानी के पंडित देवरत्न की गणना देश-सेवकों में की जाती है। प्रेमचन्द वास्तविकता पर प्रकाश डालते हुए व्यंग्य करते हैं - "कृषि सम्बन्धी विषयों से उन्हें विशेष प्रेम था। पत्रों में जहां कहीं किसी नयी खाद या किसी नवीन आविष्कार का वर्णन देखते, तत्काल उस पर लाल पेन्सिल से निशान कर देते और अपने लेखों में उसकी चर्चा करते थे। किन्तु शहर से थोड़ी दूर पर उनका एक बड़ा ग्राम होने पर भी, वह अपने किसी असामी से परिचित न थे।"

एक बार नगर में प्लेग का प्रकोप होने पर देवरत्न शर्मा अपने इलाके में जाते हैं। वहां रहकर कुछ दिनों में उन्होंने देख लिया कि उनका मुख्तार तथा अन्य कर्मचारी पुलिस के साथ मिलकर किस तरह उनके असामियों का गला दबाते हैं। उन्हें यह अनुभव होता है कि दीन किसानों की इन अत्याचारों से रक्षा करने के लिए उनका गाँव में रहना आवश्यक है।

किसान एक-एक दाना अनाज बेचकर भी एक चौथाई से अधिक लगान नहीं चुका पाते। ऐसी स्थिति में भी किसानों से जबरदस्ती पूरा लगान वसूल करने का प्रयत्न किया जाता है। 'जेल' कहानी की मृदुला मंदी के समय किसानों पर की जाने वाली जोर-जबर्दस्ती के विषय में कहती है, "देहातों में आजकल संगीनों की नोक पर लगान

शब्द–ब्रह्म

E ISSN 2320 – 0871

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

17 नवम्बर 2016

पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वसूल किया जा रहा है। किसानों के पास रुपये हैं नहीं, दें तो कहाँ से दें। अनाज का भाव दिन-दिन गिरता जाता है। खेत की उपज से बीजों तक के दाम नहीं आते। मेहनत और सिंचाई के ऊपर। गरीब किसान लगान कहाँ से दें।"

प्रेमचन्द की 'सवा सेर गेहूं' कहानी में महाजनी शोषण की निर्दयता पूर्णतया उभर आयी है। इस कहानी का शंकर किसान गाँव के विप्र महाराज से सवा सेर गेहूं उधार लेता है। सात वर्ष में यह सवा सेर गेहूं मूल, ब्याज सहित साढ़े पाच मन हो जाता है। सात वर्ष बाद महाराज शंकर से दस्तावेज लिखवा लेते हैं। शंकर जब मजदूरी कर के भी उसका ऋण नहीं चुका पाता तो विप्र महाराज उसे सूद में अपने यहाँ मजदूरी पर रख लेते हैं। इस प्रकार सवा सेर गेहूं उधार लेकर शंकर जीवन भर के लिए विप्र महाराज का दास बन जाता है।

निष्कर्ष

प्रेमचन्द ने भारतीय कृषक के आर्थिक अभाव और विवशता का चित्रण करके उसके लिए उत्तरदायी, जमींदारी प्रथा और महाजनी शोषण पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इस प्रकार प्रेमचन्द ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था का यथार्थ चित्र बड़ी सफलतापूर्वक प्रस्तुत करते हुए संकेत कर दिया है कि कृषकों की दशा में सुधार करना आवश्यक है। किसान की दुर्दशा का मूल कारण जमींदारी प्रथा है। इसलिए प्रेमचन्द इस प्रथा का उन्मूलन करना आवश्यक समझते हैं। हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द का इस दृष्टि से विशिष्ट महत्व है कि उन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों में भारतीय कृषक की परिस्थितिजन्य विवशता को पूरी तरह उभार दिया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 ज्ीम ैवबपवसवहल व ित्नतंस स्पमि ए ैउपजी ज्ण्स्ण्

2 भारत में समाजशास्त्र, डॉ.संजीव महाजन, पृष्ठ 103

3 आधुनिक भारत (1707-1857), रहीम सिंह, पृष्ठ 112

4 मानसरोवर-भाग-1, प्रेमचंद, पृष्ठ 163

5 मानसरोवर- भाग-3, प्रेमचंद, पृष्ठ 285

6 मानसरोवर - भाग 7, प्रेमचंद, पृष्ठ 280

7 मानसरोवर - भाग 7, प्रेमचंद, पृष्ठ 10

8 मानसरोवर - भाग 8, प्रेमचंद, पृष्ठ 183

9 मानसरोवर - भाग 8, प्रेमचंद, 282

10 विविध प्रसंग - भाग - 2, पृष्ठ 487